अध्याय दूसरा

आंचलिकता से तात्पर्य

२.१. अंचल शब्द के अर्थ

२.२ आंचलिक उपन्यास

२.३ " मैला आँचल " में आंचलिकता

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

SHIVAJI UNIVERSITY
LIBRARY
KOLHAPUR

२.१ <u>अंचल शब्द के अर्थ</u> -

आंचलिक शब्द अंचल से बना है। अतः आंचलिक या आंचलिकता की व्याख्या के लिए अंचल शब्द का विवेचन अपेक्षित है।

अंचल शब्द के बारे में शम्भुसिंह ने लिखा है - " अंचल शब्द मूलतः संस्कृत शब्द अंचल है। जिसकी व्युत्पत्ति " अंच " धातु में " अलच् " प्रत्यय के योग से हुयी है। " १
डॉ. देवेश ठाकुर का कथन है कि, शब्दकोशों में अंचल का अर्थ " सीमा का समीपवर्ती भाग "। २ डा. राजकुमारी सिंह का विचार है कि अंचल का अभिधामूलक अर्थ वस्त्र प्रांत भाग या पल्ला। साहित्य में इसे देश के अर्थ में प्रयुक्त करते हैं। इस दृष्टि में कोई भी विशेष भाग या क्षेत्र जिसकी अपनी संस्कृति, रीति - रिवाज, सुख - दुख, जीवन प्रणाली, आचार - विचार व अपनी समस्यायें, परंपरायें एंव मान्यताएँ होती है, अंचल कहा जा सकता है। ३

हलायुध शब्दकोश में अंचल का अर्थ दिया है - " अंचल शब्द की शाब्दिक व्याख्या - अंचल शब्द का सीधा और स्पष्ट अर्थ है " जनपद " या " क्षेत्र " विशेष जो अपने में एक पूर्ण भौगोलिक इकाई होता है। " ४

"व्यावहारिक हिंदी कोश " में " अंचल " का जो अर्थ दिया है " साडी का छोर या सिरा, झोली, क्षेत्र - विशेष, सीमा के पास का प्रदेश या क्षेत्र। " ५ ज्ञान शब्द कोश में अंचल शब्द का अर्थ इस तरह दिया है - " अंचल - गतिहीन, स्थिर, चिरस्थायी, अटल। पु॰ पहाड। कील, ७ की संख्या (७ कुल पर्वतोंपर से) ६ " नालन्दा विशाल शब्द सागर" में अंचल शब्द का अर्थ - " अंचल - जो न हिले। निश्चल। चिरस्थायी।" ७

" नालन्दा विशाल शब्दसागर " और ज्ञान शब्द कोश में अंचल का जो अर्थ दिया है उसमें साम्य दिखायी देता है।

इससे स्पष्ट होता है कि अंचल के लिए सीमा के पास का प्रदेश या क्षेत्र यह अर्थ बिल्कुल सही है। अंचल यह पिछडा हुआ या कोने में पडे हुऐ भाग के अर्थ में आया है। आंचलिक उपन्यास पात्रों को प्रमुखता न देकर अंचल को अभिव्यक्ति देने में सहायक होता है। किसी भी अंचल का निर्माण पूर्वनियोजित नहीं होता। अंचल अपने आप ही बनते हैं।

डा॰ राजकुमारी सिंह के आंचलिकता के बारे में विचार है - " आंचलिकता " " अंचल " शब्द से बना है। आंचल का

अर्थ है प्रदेश -विशेष, एक सीमित क्षेत्र जो एक विशिष्ट भौगोलिक पर्यावरण में आबध्द है। अंचल शब्द से एक वैशिष्ट्यपूर्ण भू - भाग या भू प्रदेश का बोध होता है, जो अपनी स्थानीय भौगोलिक या प्राकृतिक विशेषताओं के कारण अन्य प्रदेशों से भिन्नता रखता है। " ८ समीक्षकों ने आंचलिकता का अर्थ स्थानीयता से लगाया है। इस प्रकार का जब अर्थ लिया जायेगा तो हिन्दी साहित्य के सभी उपन्यास आंचलिक हो जायेंगे। क्योंकि प्रत्येक उपन्यास में स्थानीयता होती है।

संक्षेप में अंचल शब्द यहीं अर्थ - बोध कराता है - " आंचलिकता शब्द " अंचल " से बना है, जिसका अर्थ कोई विशेष भूप्रदेश कि जिसकी अपनी स्थानीय और भौगोलिक विशेषताएँ होती है। और वह अन्य प्रदेशों से अलग होता है।

उपर्युक्त सारी परिभाषाओं का अध्ययन करने के पश्चात स्पष्ट होता है कि अंचल शब्द का अर्थ सभी विद्वानों ने करीब समान रूप में ही बतलाया है। इसी अंचल शब्द से आंचलिकता शब्द बना है। और यह प्रदेश विशेष अथवा एक " सीमित क्षेत्र " से तात्पर्य रखता है।

आंचलिकता शब्द का प्रयोग प्रचलन के रूप में हिन्दी साहित्य में पहले नहीं था। वरन् सर्जना की अनिवार्य माँग के रूप में उसका जन्म हुआ। " आंचलिकता" शब्द हिन्दी में सन १९५२ – ५३ के आसपास प्रयुक्त होने लगा और यह धीरे – धीरे लोकप्रिय होकर एक साहित्यिक आंदोलन बन गया। १ इसके लिए उदाहरण के रूप में देखेंगे तो नागार्जुन का " बलचनमा " और रेणु का " मैला आँचल "। हिंदी में सर्व प्रथम फणीश्वरनाथ रेणु ने अपने उपन्यास " मैला आँचल " की भूमिका में आंचलिकता का प्रयोग किया। विशिष्ट भौगोलिक स्थितियों से उत्पन्न समस्याएँ, मान्यताएँ, संस्कार और अंधविश्वास रीती रिवाजादि उस अंचल को आंचलिकता प्रदान करते है। आक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्सनरी के अनुसार " रीजन " या प्रदेश अपने प्राचीन अर्थ के लिए प्रयुक्त होता था। परंतु अब इसका अर्थ भूमि का एक बडा टुकडा जो कुछ विशेष प्राकृतिक रूपों, जलवायु सम्बन्धी दशाओं, जीव वनस्पति आदि के कारण विशिष्टता रखता है।

अंग्रेजी के लेखकारों ने आँचलिकता से संबंधित अपने विचारों को भाषिक अभिव्यक्तियों में व्यक्त किया है। आंचलिकता का अर्थ है, क्षेत्र – विशेष के सत्य का उद्घाटन करता हुआ जीवन हो किसी एक परिवेश विशेष नहीं वरन् उस खंड की समग्र क्षेत्रीयता का प्रतीक है। अंग्रेजी के उपन्यासकार " थामस

हार्डी " के उपन्यास देखनेपर हमें आंचलिकता को पहचानने की दृष्टि मिलती है। अंग्रेजी लेखकों में भी आंचलिकता की प्रवृत्ति दिखायी देती है। आंचलिकता अपने विशेष तौर तरीके व रीति - रिवाजों के कारण पहचानी जाती है।

२.२ आंचलिक उपन्यास -

हिंदी में आंचलिक उपन्यास की परंपरा " मैला आंचल " के साथ शुरु होती है। आंचलिक उपन्यासों के संदर्भ में कई प्रश्न खडे होते हैं। पहला प्रश्न है कि क्या हिंदी में आंचलिक उपन्यासों का प्रारंभ बहुत पहले हो चुका था ? कुछ लोग पहला हिंदी आंचलिक उपन्यास " रामलाल " (१९१४) तो कुछ लोग नागार्जुन के रतिनाथ की चाची, " बलचनमा " उपन्यास को " मैला आंचल " से पूर्व प्रकाशित मानते है। परंतु यह कहाँ तक उचित है ? यह भी देखना आवश्यक है। आंचलिक उपन्यासों का प्रारंभ बहुत पहले हो चुका था लेकिन " मैला आंचल " की तुलना में सुधारित नहीं था। स्वाधिनता के बाद गावों की ओर लोगों की दृष्टि गयी। गांधीजी ने तो पहले देश का मुंह गांव की ओर मोडना चाहा था। यह देश मुख्यत: गावों का ही है। सरकार और विरोधी दल सभी अपने को सशक्त बनाने के लिए गांव का नाम लेने लगे। स्वाधीनता के बाद के लेखकों में अनेक ऐसे लेखक है जो गांव से आये

हुये थे। इन्हें अपने - अपने अंचलों के ग्रामीण जीवन का गहरा अनुभव था। इसीलिए उन्होंने केवल ग्रामजीवन के सत्य को ही उजागर नहीं किया। तो अपने अपने अंचलों के विशिष्ट गावों को भी स्थापित किया। गांव की किसी एक समस्या को लेने के स्थानपर उन्होंने समग्र रूप को उद्घाटित करना चाहा। इस प्रकार कथ्य की नवीनता लिए हुये एक विशेष प्रकार के उपन्यासों का जन्म हुआ। इसी प्रकार के उपन्यासों को आंचलिक उपन्यास कहा गया। अनेक आलोचकों ने उपन्यास की नवीनता को पहचाना और उनकी ग्रामोन्मुखता को रेखांकित किया। नन्ददुलारे वाजपेयी ने कहा है कि - " आंचलिक उपन्यास वे है जिनमें अविकसित अंचल प्रदेश के आदमियों अथवा आदिम जातियों का विशेष रूप से चित्रण किया गया हो। " १० देवराज उपाध्याय का कथन है " आंचलिक उपन्यास में लेखक देश के किसी विशेष भू - भाग पर ध्यान केंद्रित कर उसके जीवन को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि पाठक उसकी अन्य विशेषताओं विशिष्ट रीति - परंपराओं तथा जीवन विधा के प्रति सचेत आकृष्ट होता है। " ११

इससे स्पष्ट होता है कि आंचलिक उपन्यासों का प्रारंभ बहुत पहले का काल नहीं माना जाता। " पाश्चात्य साहित्य में प्रादेशिक किंवा आंचलिक उपन्यासों का प्रारंभ १८०० से माना जाता है। जब मेरिया एजवर्थ का " कैसेल रेक्रेंट " प्रकाशित हुआ। " १२ पश्चिम में थामस हार्डी,

फाकनर आदि उपन्यासकारों के उपन्यासों के माध्यमसे आंचलिक उपन्यास की शुरुआत पहले ही हो चुकी थी। इनके उपन्यासों को देखने पर भी आंचलिक उपन्यास का वहीं स्वरूप स्पष्ट होता है जो हिंदी उपन्यासों का है। तो अब यह स्पष्ट होता है कि इस प्रकार का पहला उपन्यास " मैला आंचल " ही है। इससे पहले के जिन उपन्यासों को आंचलिक कहा गया है वे गांव से संबंध होते हुये आंचलिक नहीं है, इसीलिए किसी भी उपन्यास को आंचलिकता के संदर्भ में " मैला आंचल " के प्रारंभ का उपन्यास नहीं कहा जाता।

प्रत्येक आंचलिक उपन्यास को एक चुना हुआ विशिष्ट क्षेत्र होता है। जिसकी अपनी भौगोलिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक विशेषताएँ होती है। उनकी अपनी रूढियों, परंपराओं, रीति -रिवाज एवं जीवनयापन का विशिष्ट ढंग सुरक्षित रहता है। आंचलिक कथा शिल्प में लेखक कथा - क्षेत्र के निवासियों के रहन - सहन, खान - पान, त्यौहार आदि का वर्णन गीतों के साथ भी करता है। " आंचलिक " उपन्यास की प्राथमिक जो विशेषता है वह इस प्रकार कि, इस प्रकार के उपन्यासों में पात्रों की भरमार होती है। " मैला आंचल " को यदि हम इस कसौटी पर कसना चाहेंगे तो वह सही अर्थों में सफल है। मैला आंचल में प्रथम खंड में स्वतंत्रता पूर्व के गांव का चित्र है तो द्वितीय खंड में रूढियों का चित्र उपस्थित किया है। इसमें छोटे - छोटे

दृश्य ही यहाँ नियोजित है। इसमें गाँव में बसनेवाली चार टोलिया दिखायी गयी है।

सारांश: हम समझ जाते है कि आंचलिक उपन्यासों में पात्रों और घटनाओं की भरमार होती है। मैला आंचल के समान और भी उपन्यास है जिनमें आंचलिकता को स्पष्ट किया है। आधा गांव (राही मासूम रजा) में गाजीपूर जिले के एक मुस्लिम बहुल गांव को उभारा है। " मैला आंचल " में जिस प्रकार स्वाधीनता के आस पास के पूर्णिया जिले के एक गांव को समग्र धूल और फूल के साथ उभार दिया गया है, उसी प्रकार " आधा गाँव " में भी मुस्लिम बहुल गांव को उभारा है। उसी प्रकार " अलग - अलग वैतरणी " (शिवप्रसाद सिंह), " जल टूटता हुआ " (रामदरश मिश्र) और " राग दरबारी ", (श्रीलाल शुक्ल) में क्रमश: बनारस, गोरखपूर और लखनऊ जिले के गांवों को पूरी समग्रता में उभारा गया है।

आंचलिक उपन्यासों में जीवनयथार्थ -

हिंदी के आंचलिक उपन्यासों ने गांव के जीवन यथार्थ को बड़ी गहराई से चित्रित किया है। उनमें गांव के जीवन की टूटन तो दिखायी

पडती है, साथ ही साथ निम्न वर्ग की उभरती हुयी संघ - शक्ति भी लक्षित होती है। इस प्रकार ये उपन्यास मध्यवर्गीय टूटन और निम्नवर्गीय नई सामूहिकता दोनों में ही आधुनिकता की पहचान करते हैं। कथाकार या उपन्यासकार केवल अपनी बात या कथा नहीं कहता वह अपने परिवेश के जीवन की कथा कहता है। आंचलिक उपन्यासों का लेखक अपने उपन्यासों में जिस सत्य को व्यक्त करता है, उसका भोक्ता है। १९४२ की अगस्त क्रान्ति का सिपाही रेणु आगे चलकर नेपाल क्रांति में कूद पड़े। सशस्त्र संघर्ष में रेणु पहली कतार में थे। वे पीठ पर वायरलेस सेट लादे क्रान्ति का संदेश कोने - कोने में पहुँचा देते थे। उन्होंने इस प्रकार की क्रांति की आग को स्वयं ने भोगा था। इसीलिए हम ठोस रूप से कह सकते हैं कि इस प्रकार का साहित्य जीवन यथार्थ का चित्रण का प्रकटन जरूर ही करता है।

आंचलिक उपन्यासों में लोकसंस्कृति का जीवन्त चित्रण है। लोकसंस्कृति का मतलब है वहाँ के निवासियों के रीति - रिवाज, रहन - सहन, वेशभूषा, त्योहार - पर्व, परंपरागत मान्यताएँ, धार्मिक रूढ़ियाँ, और विश्वास, उसके लोकगीत और नृत्य, उनके मनोरंजन की विविध प्रणालियाँ आदि सब का यथार्थ चित्रण आंचलिक उपन्यासों में हुआ। इसके लिए रेणुजी के मैला आंचल, जुलुस आदि उपन्यास अच्छे उदाहरण है। वाजपेयी जी का

कथन है कि , " आंचलिक उपन्यास मूलत: यथार्थवाद से संम्बध्द है। विशेषता के लिए यथार्थवादी उपन्यासकार विभिन्न विद्वानों की सहायता लेते रहते है। आंचलिक उपन्यास में मानव, विज्ञान, नृतत्व, जीवविज्ञान और सामाजिक विज्ञान के तथ्यों का उल्लेख किया गया है। " १३ अब प्रश्न यह है कि सामाजिक यथार्थ कितना आधुनिक है और कितना पारंपारिक ? आंचलिक उपन्यासों में पिछडे हुये अंचलों को चित्रित करने के बावजूद आधुनिक चेतना है। " राग दरबारी " व्यंग्य प्रधान उपन्यास है। इसमें समकालीन गांव के यथार्थ को बहुत निर्मम दृष्टि से पहचाना गया है। लेखक ने सामान्य जन की पीडा और उसकी सामाजिक शक्ति के प्रति किसी प्रकार की आस्था नहीं दिखायी है किंतु उसने गांव के वर्ग की सारी अमानवीय क्रूर लीला को बडी सच्चाई से प्रस्तुत किया है। आंचलिक उपन्यासों की यही यथार्थता की महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

आधुनिक चेतना -

आंचलिक उपन्यासों में आधुनिक चेतना है। कुछ शहरी लेखकों ने यह आरोप लगाया है कि आंचलिक उपन्यास का लेखन आधुनिकता से पलायन है। श्री नन्ददुलारे वाजपेयी ने कहा है - " आंचलिक उपन्यास हम उसे

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

कहते है जिसमें अपरिचित भूमियों और अज्ञात जातियों के जीवन का वैविध्यपूर्ण चित्रण हो।" १४ आंचलिकता के एक बहुत बड़े समर्थक और उपन्यास लेखक विवेकीराय आंचलिकता और आधुनिकता को एक दूसरे का विरोधी मानते हुये प्रतीत होते है उनका कहना है,"गांव अभी ऐसी बौध्दिकता, आधुनिकता और नागरिकता में प्रशिक्षित नहीं हो पाये हैं। १५ किंतु ये मत भी भ्रामक है। आंचलिक उपन्यासों में आधुनिक चेतना है। लेखकीय स्तर पर भी और उस अंचल के जीवन के यथार्थ के स्तर पर भी। कुछ शहरी आलोचकों ने और कलाकारों ने शहर के मध्यवर्गीय जीवन टूटन संबंध हीनता मूल्यहिनता आदि को ही आधुनिक बोधमान लिया है। आधुनिकता - बोध के रूप में इन्होंने अस्तित्ववाद और मनोविश्लेषणवाद को लिया है। व्यवहार में इन लोगों ने यौन संदर्भों की विसंगतियों को आधुनिकता के संदर्भ में विशेष महत्त्व दिया है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि आधुनिकता दर्शन के रूप में केवल अस्तित्वाद और मनोविश्लेषणवाद में है तथा व्यवहार में केवल यह टूटते हुये शहरी मध्यवर्ग या स्वच्छन्द जीवन जीते हुये अभिजात वर्ग में है। यह धारणा गलत है, इसे मान लेने पर मार्क्सवाद जैसे आधुनिक दर्शन को और गांव में उभरते हुये आधुनिक जीवन के यथार्थ के अनेक आयामों को अनाधुनिक मान लेना पड़ेगा। आधुनिकता यह एक यथार्थ दृष्टि है। यह अपने समय के समाज और व्यक्ति दोनों के ही

जीवन में उभरते हुये यथार्थ के जटिल और संश्लिष्ट रूप की पहचान करती है। स्वाधीनता प्राप्ति के बाद हमारे देश में अनेक नई परिस्थितियां पैदा हुयी। अनेक राजनीतिक आर्थिक सामाजिक परिवर्तन हुये और इन सबका गहरा प्रभाव गांव के जीवन पर भी पड़ा और गांव का जीवन पारंपारिक जीवन न रहकर अनेक आधुनिक प्रश्नों समस्याओं से जटिल हो गया। इसलिए इन गांवों की पहचान आधुनिक भारत की पहचान है। यह आधुनिकता से पलायन नहीं, बल्कि गांवों के संदर्भ में आधुनिक भारत की पहचान है।

बलचनमा नामक उपन्यास में बलचनमा नामक एक निम्नवर्गीय किसान - पुत्र की यातना पूर्ण जीवन कथा है। इसमें किसान का दु:ख - दर्द और संघर्ष है तथा शोषण व्यवस्थाओं पर प्रहार किया गया है। इस प्रकार आधुनिकता यहाँ भी निम्नवर्गीय समाज की नई चेतना की पहचान में है। " अलग - अलग - वैतरणी " उपन्यास आधुनिकता बोध को ग्राम परिवेश में पूरी तरह चरितार्थ करता है। " जल टूटता हुआ " उपन्यास आधुनिकता का साक्षात्कार कई बिन्दुओं पर करता है। और भी आंचलिक उपन्यास हैं जिनमें ग्राम परिवेश में आधुनिकता - बोध को देखा जा सकता है। उनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण उपन्यास ये है - वरुण के बेटे, बाबा बटेसरनाथ (नागार्जुन) सागर लहरें और मनुष्य (उदयशंकर भट्ट)

परती - परिकथा (रेणु), ब्रह्मापुत्र (देवेंद्र सत्यार्थी), पानी के प्राचीर, सूखता हुआ तालाब (रामदरश मिश्र), बबूल, लोकऋण (विवेकी राय) कगार की आग (हिमांशु जोशी) अंधेरे के विरुद्ध (उदयराज सिंह), माटी की महक (सच्चिदानंद धूमकेतु) आदि।

आंचलिक उपन्यास की भाषा -

आंचलिक उपन्यासों की भाषा ने एक नया आयाम धारण किया है। इसीलिए उसे अलग रूप से देखने की आवश्यकता होती है। आंचलिक उपन्यासों ने एक ऐसी भाषा का प्रयोग किया है जिसमें आंचलिक बोली के शब्दों, मुहावरों, ध्वनियों, उक्तियों, भंगिमाओं और यहां तक कि वाक्यों को भी लिया गया है। इन उपन्यासों में अंचल विशेष की बोली का गहरा प्रभाव दिखायी देता है। यह भाषा टकसाली खड़ी बोली से काफी अलग प्रतीत होती है। खड़ीबोली का लिखा गया उपन्यास को सब तभी समझ सकते हैं, परंतु आंचलिक उपन्यास की भाषा आसानी से समझ में नहीं आती। भाषा और उनके अनुभव एक दूसरे से जुड़े होते हैं। किसी अंचल के कुछ पात्र ऐसे होते है जो ठेठ वहीं के होते हैं और वे वहीं के शब्दों, मुहावरों आदि का प्रयोग करके स्वयं को उद्घाटित करते है।

आंचलिक उपन्यासों की भाषा में काव्यात्मकता का गहरा प्रभाव दिखाई पड़ता है। यह काव्यात्मकता मनोवैज्ञानिक कविता की तरह यौन - संदर्भों के प्रतीकों से पीड़ित है। काव्य के द्वारा प्रकृति को सजग किया है। लोकगीतों को, लोक कथाओं, लोकनृत्यों को भी काव्यबिम्ब के रूप में प्रस्तुत किया गया है। अर्थ की गहरी व्यंजना के स्तर पर भी आंचलिक भाषा का अपना विशेष महत्व है। काव्यात्मक शक्तियों के उपयोग से भाषा को गहरी अर्थमहत्ता प्राप्त होती है। यहि आंचलिक उपन्यासों की भाषा का स्पष्ट वैशिष्ट्य और महत्त्व है। आंचलिक उपन्यास में जटिल यथार्थवादी परिवेश की उत्कट अवतारणा एव विशेष स्थान रखता है। डॉ॰ रामदरश मिश्र कहते है -
" आंचलिक उपन्यासकार एक दिशा में बहने की अपेक्षा पूरे अंचल की चतुर्मुख यात्रा करता है और इन उपादानों को यहाँ - वहाँ से चुनता है जो मिलकर अंचल की समग्रता का निर्माण करते हैं। " १६

निष्कर्ष : -

उपर्युक्त विवेचित कृतियों द्वारा हिंदी के आंचलिक उपन्यासों की प्रगति को स्थापित इन कृतियों के अतिरिक्त भी अनेक उपन्यास हैं जिनमें हम देश के विभिन्न अंचलों की झाँकी परिलक्षित कर सकते है और अपनी धरती के नवीन अंचलों से परिचय पा सकते हैं। आंचलिक उपन्यास स्वतंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में विकसित एक नवीन विधा है। और इस द्वारा एक प्रकार से नवीन

समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है। इस प्रकार के उपन्यासों द्वारा जीवन के अनदेखे, अनजाने आयामों का उद्घाटन हो रहा है। आँचलिक उपन्यासों के द्वारा पाठकों की चेतना विकसित हो रही है। आँचलिक कृतियों के माध्यम से देश के विभिन्न अंचलों के जीवन, संस्कृति परंपरा और समस्याओं आदि का तुलनात्मक अध्ययन करने की सुविधा और प्रेरणा मिलती है। हिंदी आंचलिक उपन्यासों के द्वारा निश्चित रूप से इस दिशा में प्रगति हो रही है जो रचनात्मक और प्रतिबध्द लेखन संदर्भ में एक स्वस्थ संकेत है।

२.३ मैला आंचल में आंचलिकता -

आंचलिक उपन्यासों का प्रमुख वैशिष्ट्य यह है कि विशिष्ठ क्षेत्र के भूभाग के निवासियों की रहन - सहन, रिति - रिवाज प्रथाओं, पर्वों, परंपराओं, मूल्यों, आस्थाओं आदि का हूबहू चित्रण करना। इन सभी दृष्टियों से जब हम " मैला आंचल " उपन्यास को देखेंगे तो वह उच्चतम श्रेणी का आंचलिक उपन्यास हमें दिखाई देगा। डा॰ प्रदीपकुमार शर्मा का कहना है कि " आंचलिक शिल्पविधान में कथानक संगठित नहीं होता। " १७ मैला आंचल का कथानक भी संगठित नहीं है। इस उपन्यास के लिए कोई नायक नहीं है। नायक के रूप

में " मेरीगंज " को लिया है। इसमें कोई भी अधिकारिक कथा नहीं है। मेरीगंज में रहनेवाले लोगों के जीवन की भिन्न - भिन्न उपकथाओं और घटनाओं को कालखण्ड और परिवेश में अभिव्यक्ति मिली है। आँचल के समग्र जीवन को उभारने के लिए रेणुजीने अनेक पर्वों उत्सावों, विश्वासों व्यथा के अवसरों, गीतों, संघर्षों, प्रकृति के रंगों का जीता जागता चित्र हमारे सामने प्रस्तुत किया है।

मेरीगंज का वर्णन करते हुये रेणुजी ने लिखा है - " लाखों एकड जमीन। वंध्या धरती का विशाल अंचल। इसमें दूब भी नहीं पनपती है। बीच - बीच में बालूचर और कहीं - कहीं बेर की झाडियाँ। कोस - भर मैदान पार करनेके बाद पूरब की ओर काला जंगल दिखाई पडता है, वही है मेरीगंज कोठी। " १८

इस वर्णन से निसर्ग सौंदर्य का चित्र हमारे सामने हूबहू प्रकट होता है। गुलमोहर को यहां गोल्डमोहर- कृष्णचूडा इन नामों से भी जाना जाता है। गुलमोहर का कृष्णचूडा इन नामों का कहना यहाँ कितना सुंदर लगता है। काले कृष्ण के मुकुट में लाल फूल कितने सुंदर लगते होंगे। निसर्ग के पेडों के नामों का भी उल्लेख यहाँ बारीकी से किया है। मेरीगंज गांव को यह नाम भी क्यों दिया गया

12286
A

इसकी कथा भी रेणुजी ने बहुतही अच्छे ढंग से बतायी है। बहुत वर्ष पहले नीलहा साहब मार्टिन जब यहाँ आकर बसा था तब उसने अपनी नवविवाहित पत्नी मेरी के नाम पर इस गाँव का नाम मेरीगंज रख दिया था। उपन्यास की कथा के लिए कोई सुसुत्रता नहीं है। उपन्यास का प्रारंभ " मेरीगंज " में मलेरिया सेंटर खुलने की सुचना से होता है। गाँव के लोग बालदेव उर्फ बलिया को बाँधकर मिलेटरी के पास ले जाते हैं। मेरीगंज गाँव की चार टोलियाँ ब्राहमण, कायस्थ टोली, राजपूत टोली, यादव टोलियों का वर्णन आया है। बालदेव कॉंग्रेसी और महात्मा गांधी का भक्त है। बावनदास सच्चा कॉंग्रेसि और देशभक्त है। कालीचरन. सोसलिस्ट है। वह वहाँ के किसानों, मजदूरों में शोषण के खिलाफ विद्रोह जगाता है। काली - टोपी वालों का भी जिक्र १ - २ स्थानों में हुआ है। इसके बाद गाँव के मठ का भी वर्णन है। मठ में व्याभिचार चलता है। अंधे महंत सेवादास की मृत्यु, रामदास महंत सेवादास का एकमात्र चेला, लछमी मठ की दासिन। मुरती लरसिंहदास के मुँह मठ की अचल सम्पत्ति पशुधन और दासिन लछमी को देखकर लार टपकने लगती है। एक दिन वह सोममतिया कहारिन की बेटी राधिया को लेकर नौटंकी कम्पनी में शामिल हो गया। परंतु वहाँ उससे राधिया छिन गयी और उसकी पिटाई

हुयी। देवेश ठाकुर ने लिखा है - " मैला आँचल का यह मठ धर्म के नामपर किए गये आडम्बरों, व्यभिचार और भ्रष्टाचार की जीवन्त चित्रावली प्रस्तुत करता है। " १९ गाँव के धनिक लोग तहसीलदार, रामकिरपाल सिंह, खेलावन यादव इनके पास पूरे गाँव की जमीन है। इनका भी वर्णन बखूबी किया है। डाक्टर के रूप में शहर की जिंदगी, अपनी मित्र ममता का साथ, बड़ी - बड़ी रिसर्चों के आकर्षण को छोडकर डा॰ प्रशान्त मलेरिया डाक्टर के शुद्ध सेवा भाव से आता है। यहाँ आकर वह जीवन के दोनों पक्षों से परिचित होता है। वह देखता है कि यहाँ के इन्सान भयातुर है। इसप्रकार डा॰ प्रशान्त गाँव के सभी हाल को देखता है। इसी के बची कमली के साथ प्रेमसंबंध आदि अनेक घटनाओं का वर्णन रेणुजीने अपने उपन्यास में किया है। आंचलिक उपन्यास की एक विशेषता है कि उसमें घटनाओं की भरमार होती है। इस दृष्टि से भी मैला आंचल उपन्यास सफल बनता है। और इन सब के आधारपर हम कह सकते है कि " मैला आँचल " में आंचलिकता है।

मैला आंचल में गाँवों के संघर्षों का वर्णन हुआ है। यथा - परिवेश के रूप में देखेंगे तो यहाँ जातिवाद के टंटे खडे होते हैं, यहाँ जो चार टोलियाँ हैं उनमें भी संघर्ष निर्माण होते हैं। राजपूतों और कायस्थों में पुश्तैनी मन - मुटाव और झगडे होते हैं। ब्राहमणों

की संख्या कम होने के कारण वे हमेशा तीसरी शक्ति का कर्तव्य पूरा करते हैं। यादवों के दल ने भी जोर पकड़ा है। जनेऊ लेने के बाद भी उन्हें राजपूतों ने यदुवंशी क्षत्रिय को मान्यता नहीं दी। इसके विपरीत समय - समय पर यदुवंशियों के क्षत्रित्व को वे व्यंगविद्रूप के बाणों से उभारते रहे। एक बार यदुवंशियों ने खुली चुनौती दे दी। इसी बीच कायस्थ टोली के मुखिया तहसीलदार विश्वनाथप्रसाद मल्लिक यादवों को विश्वास दिलाते हैं। इसी के बीच पार्टियाँ निर्माण होती हैं। बालदेव और हरगौरी का झगड़ा भी यहाँ राजनीतिकता को लेकर हुई है। गांव के अन्य जाति के लोग सुविधानुसार इन्हीं तीन दलों में बँटे हुये हैं। बात -बात पर इनमें संघर्ष होता है और एक - दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करते हैं। राजनीतिक दलों के कार्यक्रमों में अपनी - अपनी सुविधानुसार तथा अवसरानुकूल हिस्सा लेते हैं। या विरोध करते हैं। मठों का वातावरण भी संघर्षपूर्ण है। लरसिंहदास भ्रष्ट तरीके से गुरु के कान भरकर, भण्डारी को सौ रुपया और नागा बाबा को पांव भर गांजा रिश्वत देकर महंती प्राप्त करने का प्रयत्न करता है। ढोंगी नागा बाबा रामदास को खड़ाऊं से पीटता है, लक्ष्मी को कुत्सित गालियाँ सुनाता है, " हरामजादी "। रण्डी। " तै समझती क्या है री? ऐं दुनिया को तू अंधा समझती है ?" 20

लेकिन गवांव के लोग इसे सहन नहीं करते। और चादर टीका के समय नागाबाबा की दाढी नोच लेते है। नागाबाबा, बेतहाशा भागता है। बावनदास, बालदेव, कालीचरन, प्रशान्त और कुछ हद तक लक्ष्मी दासिन नैतिकताकी स्थापना के लिए संघर्ष करते है। जो अन्य लोग है वे अनैतिक है। इसीलिए संघर्ष का जो रूप है वह नैतिकता - अनैतिकता की टकराहट को उजागर करता है।

लोकगीतों, लोकनृत्यों की भी आँचलिकता में महत्त्व है। लोकगीतो, लोकनृत्यों का भी निर्माण मैला आंचल में हुआ है। महंथ साहब के मर जाने के बाद साधु लोग कुदाली से गोर में मिट्टी भरने लगते हैं, तो गाँव के कीरतनियाँ लोग समदाउन शुरु करते हैं -

" हाँ रे, बडा रे जतन से सुगा एक हे पोसल, माखन
दुधवा पिलाए।
हाँ रे, से हो रे सुगना बिरिछी चढ़ि बैठल
पिंजडा रे धरती लोटाए ..... ? " २१

इसके द्वारा गाँव की सोट्यों पर भी प्रकाश डालागया है। आज भी किसी संत के मरने के बाद कीरतनियाँ लोग उसकी अर्थी कीर्तन के साथ स्मशान में पहुँचाते है। दिन भर धान झाड - फटककर जमा किया। फिर धान के बोझे छाँट दिए गए और शाम को फिर दबनी - मडनी शुरु हो गयी। शाम को धूर के पास लोरिक या कुमर, बिज्जेभान की

गीत कथा होती है -

" अरे राम राम रे दैबा रे इसर रे महादेव,
बामे ठाढ़ी देवी, दुरगा दाहिन बोले काग।
अपन मन मैं सोच करैये मानिक सरदार,
बात से नाहीं माने वीर कनोजिया गुआर ..... । " २२

इसप्रकार लोग काम करते समय दिल बहलाने के लिए गी कथा, गीतों, कीर्तनों को अपनाते हैं। गाँव भर के लोग तहसीलदार साहब के खम्हार में जमा होते हैं। और मृदंग पर चलती बजाते है। नृत्य संगीत अंचलीय जीवन का अविभाज्य अंग है।

" तिरकिट धिन्ना, तिरकिट धिन्ना।
धिन तक धिन्ना, धिन तक धिन्ना।
धिनक धिनक था,
ध्रिक् ध्रिक् तिन्ना। " २३

सोशलिस्ट पार्टीवालों ने भी परचे बाँटे थे। वह परचा लाल रंग का था और उसमें दोहा था

" जो जोतेगा सो बोएगा।
जो बोएगा सो काटेगा।

जो काटेगा वह बाँटेगा। " २४

मेहनत करनेवाले को फल मिलता है और सच्चे अर्थ में मेहनत करनेवाला आदमी ही तभी वो दान दे सकता है। इस प्रकार लोकगीतों, लोकनृत्यों का जीता जागता चित्रण रेणुजी ने यहाँ किया है।

रेणुजीने पर्व - त्योंहारों का वर्णन भी गीतों केग साथ किया है। महँगी पडे या अकाल हो लेकिन तभी लोग त्योहार मनाते ही थे। होली तो फागुन महीने की हवा की बावरी होती है। फागुन की हवा संजीवनी फूँक देती है। दूसरे पर्व त्योहारों को तो टाल देंगे लेकिन होली तो मुर्दा दिलों को भी गुदगुदी लगाकर जिलाती है। फगुआ का हर एक गीत देह में सिहरन पैदा करता है। फागुन महीने की बावरी हवा में लोगों के गले में बरबस ही गीत घुल जाते हैं -

" अरे बँहियाँ पकड़ि झकझोरे श्याम रे
फूटल रेशम जोड़ी चूड़ी
मसकि गई चोली, भींगावल साड़ी
आँचल उड़ि जाए हो
ऐसो होरी मचायो श्याम रे ..... ।" २५

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

उत्सव त्योहारों के साथ - साथ पारिवारिक और प्रेयस जीवन के चित्र भी लोकगीतों में मुखर हुये है जाट की प्रेयसी - पत्नी, सास - ससुर से झगड कर, उसकी अनुपस्थिति में नैहर चली जाती है। अपनी अतिशय सुंदर जटिटन की जाट खोजने जा रहा है। -

" सुनरी हमर जटिनियाँ हो बाबूजी,
पातारे बाँस के छौंकिनियाँ हो बाबूजी।
गोरी हमर जटिनियाँ हो बाबूजी।" २६

इस प्रकार अनेक - अनेक लोक - प्रसंगों को इन रस सिक्त गीतों के माध्यम से अभिव्यक्ति देकर लेखक ने मिथिला के लोक - जीवन की माधुरी का दर्शन किया - कराया है और इन सबसे वहाँ के अंचल को एक विशिष्ट भूमिका पर अभिव्यक्ति मिल गई है।

इन सबके साथ मेरीगंज के परिवेश में विभिन्न व्यक्ति - चरित्र भी रूपायित हुये है और ग्राम्य जीवन की गति के साथ - साथ ग्राम्य मानसिकता का भी अध्ययन किया गया है। पूरे गांव में जाति के आधारपर टोले बने हुये हैं। इन टोलियों में परस्पर वैमनस्य है। व्यक्ति चरित्र के रूप में देखें तो बलदेव बगुला भगत कांग्रेसी है। कपड़ा व चीनी के परमिट में वह बेईमानी करता है। कालीचरन

सोशलिस्टों का नेता और संथालों का हमदर्द है। गाँव में मठ भी है। महंत सेवादास और रामदास के किस्सों से धार्मिक आडम्बर का स्वरूप स्पष्ट होता है। लक्ष्मी कोठारिन इन महंतों के लिए आकर्षण का विषय रही है। जोतखी जी ने गाँव वालों को भाग्यवाद और अंधविश्वासों के खूँटे से बाँध रखा है। प्रगति का कोई भी चरण जोतखी के अभिशाप से मुक्त नहीं है। इसी प्रकार बाहर से आये डा॰ प्रशांत और बावनदास का चरित्रांकन भी ग्राम्य अंचल में जागृति प्रवेश के प्रतीक माध्यम से हुआ है। गाँव में विकसित हो रही नयी चेतना मलेरिया सेंटर तथा चरखा सेंटर खुलने के माध्यम से व्यक्त होती है। मंगलादेवी का चरित्र भी धीरे - धीरे बदलते हुये भारतीय नारी के परिवेश को अभिव्यक्त करता है।

इन सबके द्वारा लेखक ने मेरीगंज की आंचलिकता को सफल अभिव्यक्ति दी है। और मेरीगंज एक ऐसे आंचलिक परिवेश का प्रतिनिधित्व करने में सफल हुआ है। जो सुप्तावस्था से धीरे - धीरे जागृत होकर नागरिक जीवन की संकुलता को आत्मसात करने का प्रयत्न कर रहा हो। इस कृति के प्रत्येक चरित्र में उसके निजीपन की प्रतिष्ठा हुयी है, लेकिन इसका वैशिष्ट्य यह है कि ये सभी चरित्र सामूहिक रूप से परिवेश के महत्त्व को प्रतिष्ठित करते हैं। परिणामतः परिवेश प्रमुख हो

जाता और मुख्यत: कृति का कथ्य आंचलिकता के निरूपण को प्राथमिकता देता - सा दीखने लगता है। आंचलिक कृति के रूप में " मैला आँचल " की यही सबसे बड़ी उपलब्धि है।

इस उपन्यास में सच्चे रूप में आंचलिकता का निर्माण है। कई आलोचकों ने इसमें नायक का अभाव दिखाया है। परंतु अंचल का नायक स्वयं अंचल ही होता है। डॉ॰ मृत्युंजय उपाध्यायजी का कहना है कि - " इसके मूल में आंचलिकता है जिसकी महत्त्वपूर्ण स्वीकृति प्रेमचंद के कथा साहित्य में हो गयी थी किन्तु " मैला आँचल " के पूर्व तक कोई ऐसी व्यवस्थित रचना प्रकाश में नहीं आ सकी, जिसका मूलकथ्य अंचल हो। " २७ कथ्य, कथा, कथन और भाषा की दृष्टि से यह कृति आद्यन्त आंचलिक है। इस कृति के कारण रेणु कोटि के उपन्यास-कारों में परिगणनीय हो गए। डॉ॰ दंगल झाल्टे का कहना है कि " फणीश्वरनाथ रेणु का " मैला आँचल " आंचलिक उपन्यासों की धारा का शक्तिमान प्रारंभ है। " २८

मैला आँचल की अर्थव्यवस्था देखने के बाद यह स्पष्ट होता है कि यह आंचलिक उपन्यास है। मैला आँचल में अर्थव्यवस्था को दर्शाकर पूरे अंचल पर प्रकाश डाला गया है। अर्थव्यवस्था किसी भी

समाज की रीढ है। उसका अध्ययन समाज को जानने के लिए अनिवार्य है। रेणु का " मैला आँचल " तो एक तरह से संपूर्ण आंचलिक समस्याओं का जीता - जागता चहचहाता चिड़ियाघर है। आर्थिक, सामाजिक, भौगोलिक, राजनीतिक - हर तरह की समस्याओं से ग्रस्त बिहार के पूर्णिया जिले का मेरीगंज गाँव इस अंचल का प्रतिक है।

इस अंचल की बीमारी एक होतो डॉ॰ प्रशांत उसकी दवा का अविष्कार करेगा। यहाँ आर्थिक दृष्टि से गाँव के लोगों की यह हालत है कि बीमारी के दिनों में कफ के जकडे हुये दोनों फेफडे··· ओढने को वस्त्र नहीं सोने को चटाई नहीं। भीगी हुई धरती पर लेटा हुआ निमोनिया का रोगी मरता नही जा जाता है। आर्थिक स्थिति की दयनीयता का पता इससे लगता है - " अभी जेहलखाना में कोल्हू पेडते रहते। तमशे! दारोगाजीने भी सोचा कि आग लगते झोंपडा जो मिले तो लाभ। " २९

पूँजीवाद और सामंती सामाजिक व्यवस्था का भी चित्रण रेणुजी ने यहाँ किया है। गरीब किसानों से पूँजीवादी सामंती लोग काम करवा लेते है लेकिन उसके बदले में दाम नहीं देते डॉ॰ प्रशांत ग्रामीण जनता की जर्जर आर्थिक स्थिति से हताश और दु:खी होकर अपनी मित्र ममता को लिखता है - " क्या करेगा संजीवनी बूटी खोजकर

उसे नहीं चाहिए संजीवनी। भूख और बेबसी से छटपटाकर मरने से अच्छा है मैलेग्नेण्ट मैलेरिया से बेहोश होकर मर जाना। तिल - तिलकर, घुल - घुलकर मरने के लिए उन्हें जिलाना बहुत ही बडी क्रूरता होगी ··· सुनते हैं, महात्मा गांधी ने कष्ट से तडपते हुये बछडे को गोली से मारने की सलाह दी थी। वह एक नए संसार के लिए इंसान को स्वच्छ और सुंदर बनाना चाहता था। यहाँ इंसान हैं कहाँ ? " 30 इसके द्वारा रेणु ने मध्यवर्गीय एवं भू - विहीन की आर्थिक स्थिति बनायी है। जादू टोना का प्रकटीकरण जोतिखी द्वारा किया गया है। जोतिखी को गाँव में डाक्टर का आना अच्छा नहीं लगता उसे लगता है कि पानी में दवा डालकर डॉक्टर हैजाही फैलायेगा। इस प्रकार रेणुजीने दरीद्रता और पिछडेपन का भी चित्रण इस अंचल द्वारा किया है।

इस प्रकार मैला आँचल की भाषा में आंचलिकता का गहरा - हल्का स्पर्श, वाच्यत्व और भावतत्व की सहज संवेदना और साथ ही विवेचनायुक्त भाषा का सफल निर्वाह हुआ है। अनेक स्थलों पर आंचलिकता के बहुल प्रयोग और आरोपण के कारण कभी - कभी सामान्य पाठक को यह विशिष्टता खटकने लगती है। इस प्रकार के भाषा शिल्प ने अधिकांश स्थलों को आंचलिक सौंदर्य और आकर्षण से भर दिया है। आंचलिक भाषा में अपना निज प्रवाह होता है। " मैला

आंचल " में लोकप्रचलित भाषा की रचना हुयी है, वह भी आंचलिकता दर्शाने के लिए महत्वपूर्ण है। अनेक स्थलों पर भाषा चित्रात्मक हो उठी।

" औरतों के झगड़े का क्या ? अभी झगड़ा किया एक - दूसरे को गालियाँ सुनाईं, हाथ चमका - चमकाकर, गला फाड़ - फाड़कर एक दूसरे के गड़े हुये मुर्दे उखाड़े गए, जीभ की धार से बेटा - बेटी की गर्दन काटी गई काली माई को काला पाठा कबूला गया। हाथ और मुँह को कोढ़ - कुष्ठ से गलाने की प्रार्थना की गई और एक - दो घंटे के बाद ही सफाई। मेल - मिलाप हो गया। एक दूसरे के हाथ से हुक्का लेकर गुड़गुड़ाने लगी। "

रेणु ने लोकभाषा के इस जीवंत प्रयोग से इस कृति में आंचलिक मिट्टी की सोंधी गंध को भर दिया है। हाथी के आगे पिद्दी, झरना दान मारना, तुकताक करना, पंचों के उपर हवाईयाँ उड़ना, जैसे रामलीला का धनुष्य जग हो गया। कूप के वेग, भंडारा भंडुल होना आदि लोकोक्तियाँ - मुहावरों के साथ व्यक्ति नामों पर भी आंचलिक प्रभाव दिखायी देता है। जैसे गन्दी बाबा, लेबिनदास शिवशक्करसिंघ आदि। इस प्रकार हम पाते हैं कि मैला आँचल की भाषा पर आंचलिक मिट्टी का प्रभाव बहुल है और उसमें सभी लोक

तत्व विद्यमान हैं जो अंचल के जीवन और वहाँ की संस्कृति को स्था-
यित करने की क्षमता रखते हैं।

निष्कर्ष -

निष्कर्ष रूप में यह उपन्यास सर्वश्रेष्ठ आंचलिकता से भरा हुआ उपन्यास है। आंचलिकता दर्शाने के लिए जितनी सारी विशेषताएँ हैं वे सभी मैला आँचल में उपस्थित हैं। आंचलिक उपन्यासों में एकसूत्रता और पात्रों की भरमार होती है, जो इस उपन्यास में है। मैला आँचल की कथावस्तु भी एकसूत्रता में बंधी नहीं है। इसमें एक के बाद एक सभी घटनाओं की भरमार हैं। उदा॰ के रूप में देखेंगे तो १) उपन्यास की शुरुवात मलेरिया सेंटर खुलने से २) चार टोलियों का वर्णन ३) मठों की स्थिति का वर्णन और इनके बीच चर्खा सेंटर खुलने की सूचना और डॉ॰ प्रशान्त और कमली के प्रेम की कथा भी अलग रूप से बतायी गयी है। इससे स्पष्ट होता है कि अनेक घटनाओं का चित्रण यहाँ हुआ है।

आंचलिक उपन्यास के लिए दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि वहाँ के पर्व त्यौहार, रिती - रिवाज, लोकगीतों, लोककथाओं आदि का वर्णन आवश्यक है। तो रेणुजी के उपन्यास को हम देखेंगे तो

त्यौहारों का वर्णन त्यौहारों के समय के गीतो का चित्रण और लोकोक्तियाँ मुहावरे आदि का प्रयोग हमें दिखायी देता है। इसके साथ - साथ संघर्षों को भी उन्होंने चित्रित किया है। भाषा के माध्यम से अंचल पर प्रकाश डाला है। इस विशिष्ठ प्रदेश की भाषा को उन्होंने यहाँ प्रकट किया है। कहा जाता है कि वहीं साहित्य सच्चा साहित्य है जो लेखक उस परिस्थिति को भोगकर लिखता है। रेणु के बारे में भी यही हुआ है उन्होंने देहाती जीवन को भोगा है। इसी के कारण ही उनकी श्रेष्ठ कृति " मैला आँचल " में आंचलिकता दिखायी देती है।

संदर्भ -

१. शम्भुसिंह, रांगेय राघव और आंचलिक उपन्यास , पृष्ठ - ११

२. डा॰ देवेश ठाकुर , मैला आँचल की रचना प्रक्रिया, पृष्ठ - १०

३. डा॰ राजकुमारी सिंह, हिंदी तथा अँग्रेजी के आंचलिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ - १८

४. संपादक : जयशंकर जोशी, हला युध कोश , पृष्ठ - ११

५. संपादक : डा॰ भोलानाथ तिवारी, व्यावहारिक हिंदी कोश

६. मुकुंदीलाल श्रीवास्तव, ज्ञान शब्द कोश, पृष्ठ - १७

७. संपादक - श्री नवलजी , नालंदा विशाल शब्दसागर, पृष्ठ - २३

८. डा॰ राजकुमारी सिंह, हिंदी तथा अँग्रेजी के आंचलिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन, पृष्ठ - १७

९. डॉ॰ मृत्युंजय उपाध्याय, हिंदी के आंचलिक उपन्यास, पृष्ठ - २२

१०. नंददुलारे वाजपेयी, सारिका नवम्बर, पृष्ठ ९१

११. देवराज उपाध्याय, हिंदी रिव्यू मैगजीन

१२. डॉ. मृत्युंजय उपाध्याय, हिंदीके आंचलिक उपन्यास, पृष्ठ - २२

१३. नंददुलारे वाजपेयी, सारिका नवम्बर, पृष्ठ ९१

१४. वही पृष्ठ ९१

१५. विवेकीराय - कल्पना (मासिक), पृष्ठ - २३

१६. रामदरश मिश्र, हिंदी उपन्यास, एक अंतर्यात्रा, पृष्ठ -१९०

१७. डॉ. प्रदीपकुमार शर्मा, हिंदी उपन्यासों का शिल्प विधान, पृष्ठ - २१२

१८. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल, पृष्ठ - १२

१९. देवेश ठाकुर, मैला आँचल की रचना - प्रक्रिया, पृष्ठ - ४०

२०. फणीश्वरनाथ रेणु - मैला आँचल, पृष्ठ - ९०

२१. वही पृष्ठ - ४५

२२. वही पृष्ठ - ७४

२३. वही पृष्ठ - ७६

२४. वही पृष्ठ - ११८

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

२५. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल, पृष्ठ - १२३

२६. वही पृष्ठ - १८०

२७. डॉ. मृत्युंजय उपाध्याय, हिंदी के आंचलिक उपन्यास पृष्ठ - ३५

२८. डा. दंगल झाल्टे, नये उपन्यासों में नये प्रयोग, पृष्ठ - ३४

२९. फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल, पृष्ठ - ११८

३० फणीश्वरनाथ रेणु, मैला आँचल, पृष्ठ - १७५